सीबीएसई कक्षा 12 इतिहास

पाठ - 9 शासक और इतिवृत्त: मुग़ल दरबार

(लगभग 16 वीं और 17 वीं शताब्दियों)

पुनरावृत्ति नोट्स

स्मरणीय बिन्दु–

1. मुगल वंश का संस्थापक बाबर था। इस वंश के अन्य शासक हुमायूं, अकबर, जहाँगीर, (सलीम), शाहजहाँ व औरंगजेब थे। अकबर इस वंश का सबसे महान शासक था।
2. क्रॉनिकल्स शैली (इतिवृत) घटनाओं का अनवरत कालानुक्रमिक विवरण प्रस्तुत करते हैं।
3. मुगल दरबारी इतिहास फ़ारसी भाषा में लिखे गए थे।
4. 'नस्तकलिक' अकबर की पसंदीदा लेखन शैली थी।
5. इतिहासकार अबुल फज्ल ने चित्रकारी को एक 'जादुई कला' के रूप में वर्णन किया है।
6. 1784 में विलियम जोन्स द्वारा कलकत्ता में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना की गयी। जिसका उद्देश्य भारतीय पाण्डुलिपियों का संपादन, प्रकाशन और अनुवाद करना था।
7. 'हरम' शब्द फ़ारसी से निकला है जिसका तात्पर्य है 'पवित्र स्थान है'।
8.
9. दरबारी इतिहास लेखन की परंपरा मुग़ल शासकों ने प्रारंभ की। दरबारी इतिहासकारों की नियुक्ति की एवं फ़ारसी को दरबारी भाषा बनाया गया। अतः इतिवृत्त फ़ारसी में लिखे गये एवं अबुल फ़ज़्ल पहला दरबारी इतिहासकार था।
10. दरबारी इतिहासकारों द्वारा लिखे इतिवृत्तों में शाही विचारधाराओं की झलक मिलती है।
11. अकबर के काल में महाभारत का फ़ारसी में अनुवाद रज़्मनामा (युद्धों की पुस्तक) नाम से हुआ।
12. मुग़ल शासन में पांडुलिपियों की रचना के लिए किताबख़ाना की स्थापना की गयी, जहाँ पांडुलिपियों के लेखन से संबंधित सभी कार्य सम्पादित किये जाते थे।
13. दरबारी इतिहासकारों व चित्रकारों द्वारा मुग़ल सम्राटों पर ईश्वर के दैवीय प्रकाश का निरूपण अपनी रचनाओं में किया गया है
14. फर-ए-इजादी का तात्पर्य है ईश्वर से निःसृत प्रकाश जो मुग़ल सम्राट को मुग़ल राजत्व के अनुसार मिला।
15. अकबर के शासन की एक महत्वपूर्ण नीति सुलह-ए-कुल है। अबुल फ़ज़्ल सुलह-ए-कुल (पूर्ण शांति) के आदर्श को प्रबुद्ध शासन की नींव बताता है।
16. अकबर ने 1563 में तीर्थयात्रा कर तथा 1564 में जज़िया कर समाप्त कर दिया।
17. मुग़ल शासक अपनी प्रजा के चार सत्वों -जीवन, धन, सम्मान और विश्वास की रक्षा करता है और इसके बदले में वह आज्ञा पालन तथा संसाधनों में हिस्से की माँग करता है। इस प्रकार अबुल फ़ज़्ल ने प्रभुसत्ता को एक सामाजिक अनुबंध के रूप में परिभाषित किया।
18. जहाँगीर ने न्याय के लिए एक जंजीर लगवाई ताकि कोई भी व्यक्ति न्याय के लिए गुहार लगा सके। मुग़ल राजतंत्र में न्याय व्यवस्था इतनी उत्तम कोटि की थी कि प्रतीक के रूप में चित्रों शेर और बकरी या गाय को एक साथ बैठा दिखाया जाता था।

19. मुग़ल सम्राटों द्वारा धार्मिक, सामरिक आवश्यकताओं की पूर्ति तथा प्रतिष्ठा व सत्ता प्रदर्शन के लिए विभिन्न राजधानियों का चयन किया गया।
20. मुग़ल शासकों द्वारा शिष्टाचार व अभिवादन के विभिन्न तरीकों को अपनाया गया जो किसी व्यक्ति के हैसियत का परिचायक था।
21. कोर्निश, सिजदा, चार तसलीम तथा जमींबोसी मुग़ल अभिवादन के तरीके थे।
22. मुग़ल बादशाह अपने दिन की शुरूआत झरोखा दर्शन से करता था। इस प्रथा का उद्देश्य जन विश्वास के रूप में शाही सत्ता की स्वीकृति को और विस्तार देना था।
23. मुग़ल बादशाहों ने सिहांसनारोहण की वर्षगांठ, ईद, शब-ए-बारात, होली, सूर्यवर्ष एवं चंद्रवर्ष के अनुसार शासक का जन्मदिन, 'नौरोज' आदि उत्सव दरबार में मनाने की प्रथा प्रारंभ की।
24. विशेष अवसरों पर मुग़ल बादशाहों द्वारा पदवियाँ ग्रहण करने की परम्परा थी। अभिजातों द्वारा भी योग्यता के आधार पर या खरीदकर बादशाहों से पदवियाँ प्राप्त की जा सकती थी।
25. खिल्लत (सम्मान का जामा) और सरप्पा (सर से पाँव तक) मुग़ल बादशाह द्वारा दिये गये प्रमुख उपहार थे।
26. शाही परिवार की स्त्रियों (बेगमों) का घरेलू वित्तीय प्रशासनिक क्षेत्र में भी दखल हुआ करता था। इनमें गुलबदन बेगम, नूरजहाँ, जहाँआरा रोशनआरा के नाम उल्लेखनीय हैं।
27. मुगलों के अधीन अभिजात-वर्ग मिश्रित किस्म का था- अर्थात उसमें ईरानी, तूरानी, अफगानी, तुर्की, रूसी, अबीसीनियाई, अरबी, सीरियाई, राजपूत, दक्खनी सभी शामिल थे। जो सैन्य अभियानों में सैनिक कमांडरों के रूप में कार्य करते थे।
28. अंबेर का राजा भारमल पहला राजपूत था जो अकबर के शाही सेना में सम्मिलित हुआ। तथा अपनी पुत्री का विवाह अकबर से किया
29. जहाँगीर के शासन काल में ईरानियों को उच्च पद प्राप्त हुए, नूरजहाँ ईरानी थी।
30. मुग़ल अभिजात वर्ग को उनकी सेवाओं के लिए मनसब प्रदान किये जाते थे जो 'जात' एवं सवार के हिसाब से होते थे। जात का अभिप्राय है शाही पदानुक्रम में अधिकारी का पद और वेतन तथा सवार यह सूचित करता है कि उससे सेवा में कितने घुड़सवार रखना अपेक्षित है। मनसब व्यवस्था की शुरूआत अकबर ने की।
31. उचित प्रशासन के लिए अनेक मंत्रियों की नियुक्ति की जाती थी मीर बख्शी (उच्चतम वेतन दाता), दीवान-ए-आला (वित्त मंत्री) सद्र-उस-सुदुर (मदद-ए-माश या अनुदान मंत्री)।
32. दरबारी लेखक वाकिया नवीस कहलाते थे जो दरबार की सभी कार्यवाहियों का विवरण तैयार करते थे।
33. सार्वजनिक समाचारों एवं सूचनाओं के लिए पूरा मुग़ल साम्राज्य तीव्र सूचना तंत्र से जुड़ा हुआ था |
34. साम्राज्य का प्रांतों (सूबों) में बँटवारा किया गया था, जो केन्द्रीय शासन के अन्तर्गत रहते थे।
35. मुग़ल साम्राज्य कई सूबों (प्रांतो) में, सूबे सरकारों में एवं सरकार परगनों में विभक्त थे।
36. कंधार सफ़ावियों तथा मुगलों के बीच विवाद का कारण था।
37. अकबर के दरबार में पहला जेसुइट शिष्टमंडल 1580 में फतेहपुर सीकरी में आया।
38. अकबर धार्मिक ज्ञान की तलाश के चलते फतेहपुर सीकरी स्थित **'इबादतखाने'** में विभिन्न धार्मिक संतों के विचारों को सुनता था।
39. मुग़लकाल की प्रमुख रचनायें हैं - **बाबरनामा** (बाबर, तुकों में) **हूँमायूंनामा** (गुलबदन), **अकबरनामा** (अबुल फ़ज़्ल), **जहाँगीरनामा** (जहांगीर), **बादशाहनामा** (अब्दुल हमीद लाहौरी)।

40. 1648 में दरबार, सेना तथा शाही खानदान आगरा से नयी शाही राजधानी शाहजहाँनाबाद (दिल्ली) चले गए थे।

महत्वपूर्ण बिंदु

- शासक और इतिवृत्त
- मुगल दरबार (16वीं 17वीं शताब्दियां)
- मुगल दरबार (पुराने संदर्भों द्वारा इतिहास की पुनर्रचना)
- विस्तृत सर्वेक्षण-राजनीतिक इतिहास
- खोज की कहानी-दरबारी कागजात (दस्तावेज़)
- उदाहरण-अकबरनामा, बादशाहनामा
- विचार-विमर्श-नय राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक इतिहास
- बाबर से औरंगजेब तक औरंगजेब के अधिकारी, शेरशाह सूरी
- प्रस्तावना-दरबारी इतिहासकार-अबुलफजल
- मुगलशासक और साम्राज्य-उलमा वर्ग
- इतिवृत्तों की रचना-शाहजहाँनामा, आलमगीरनामा, तुजुके जहाँगीरी आदि
- तुर्की से फारसी की ओर
- पांडुलिपियों की रचना
- रंगीन चित्र
- आदर्श राज्य-सुलह कुल-जन-कल्याण, मनसबदारी प्रथा
- जहाँगीर तथा शाहजहाँ का काल वैभव-विलास का काल
- अकबर की फार्मिक नीति, राजपूत नीति
- औरंगजेब के समय कला को झटका
- राजधानियाँ नये शहर
- मुगल दरबार-झरोखा दर्शन
- पदवियाँ, उपहार, भेंट, कोर्निश
- शाही परिवार
- सूचना तथा साम्राज्य
- प्रांतीय शासन
- सीमाओं से परे
- तीर्थयात्रा और व्यापार गुरूओं के प्रति असीम आस्था-धर्म पर विमर्श
- मुगल वास्तुकला, चित्रकला, सांस्कृतिक विकास
- मुगलहरम, मुगल कारखाने
- केन्द्रीय प्रशासन